International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 104-108

कृषि क्षेत्र में फसलों से स्वरोजगार के अवसर

गिरजा शंकर*
डॉ. चंद्रकांत अवस्थी**

सार

कृषि क्षेत्र से सम्बन्धित स्वरोजगार से आशय है कि भारत में जितनी भी फसलें होती है। उनसे ग्रामीण व शहरी आम आदमी किस प्रकार से स्वरोजगार उत्पन्न कर सकता है। स्वरोजगार यानि की स्वयं सक्षम होना चाहे वह छोटे स्तर में हो या बडे स्तर पर हो स्वरोजगार अति आवश्यक है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि से ही यहाँ के लोगो की आजीविका चलती है। भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का एक अहम योगदान रहा है देश की लगभग 65 प्रतिशत से भी अधिक ग्रामीण परिवार कृषि से अपना जीवनयापन कर रहे है। देश दुनिया में दुध दाल जूट जैसे उत्पादन का पहला स्थान है दूसरे स्थान पर चावल गेहूँ गन्ना मूँगफली सब्जियाँ फल कपास मे स्थान है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र की प्रमुख फसले–गेहूँ, चना, मटर, मूँगफली, गन्ना, जौ, बाजरा, मक्का, दाले–मूंग, अरहर, उड़द, मसूर सब्जियाँ–टमाटर, बैंगन, धनिया, मिर्च, लौकी, मैंथी, शलजम, आदि। इन फसलो के उत्पादन से स्वरोजगार प्राप्त किया जा सकता सरकार इनको सही तरीके से उत्पन्न करने के लिए कई योजनाओ का लागू किया है। भारत देश की उन्नति और खुशहाली का रास्ता ग्रामीण क्षेत्र से जाता है भारत में आज भी लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या रोजगार कृषि के माध्यम से उपलब्ध होता है। पिछले कुछ वर्षों में भारतीय कृषि उत्पादन के क्षेत्र में अहम योगदान दिया है लेकिन मौसम और कीमत के झटकों के बावजूद उत्पादन को बढ़ाने का प्रयास लगातार जारी रहा है प्रारंभिक व आधुनिक तकनीकों और कृषि उपकरणों की मौजूदगी के बावजूद खासतौर पर तंग हाल छोटे किसान और उनका लाभ सही से नहीं उठा पा रहे हैं वे घाटे की खेती करते हुए ऐसे दुष्चक्र में फंसे हुए कि ज्ञान और कौशल से वंचित रह जाते हैं इसलिए कृषि में उत्पादन बढ़ाने से फसलों के द्वारा किसानों की क्षमता गुणवत्ता एवं तकनीक का प्रयोग को बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है जिससे कि फसलों की उत्पादकता एवं उत्पादन क्षमता तेजी से वृद्धि हो सके फसलों से हमें प्राप्त स्वरोजगार मिले कृषि फसलों पर आधारित स्वरोजगार प्राप्त हो सके कृषक चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी हो अपनी फसलों से उत्पादन बढ़ाने का कार्य पूर्ण कर सके और स्वरोजगार में तेजी से वृद्धि हो सके।

शब्दकोश: *स्वरोजगार, फसलों की उत्पादकता, आधुनिक तकनीक, कृषि उपकरण, उत्पादन क्षमता।*

प्रस्तावना

भारत में सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए परंपरागत तकनीक के स्थान पर आधुनिक कृषि पर जोर दिया जा रहा है वर्तमान में कृषि पर सबसे अधिक दबाव बढ़ती जनसंख्या का ही है देश में तेजी से बढ़ रही औद्योगीकरण विकास कार्यों से शहरीकरण में खेती योग्य भूमि और जल जैसे प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता को कम कर दिया है भारत में दूसरी तरफ कृषि में लगातार एक ही प्रकार की फसलें बोने व एक ही तरह के आदान–प्रदान का प्रयोग करने से ना केवल फसलों की पैदावार में कमी आई है बल्कि उनकी गुणवत्ता में भी गिरावट दर्ज की गई है एक फसल प्रणाली न तो आर्थिक दृष्टि से लाभदायक है और न ही परिस्थिति की दृष्टि से अधिक उपयोगी है अतः फार्म पर धान्य फसलों के साथ दलहनी फसलें, बागवानी फसलें, पशुपालन, मछली पालन, मधुमक्खी पालन, को भी अपनाना चाहिए जिससे यदि किसी वर्ष में फसल नष्ट हो

---

* शोधार्थी, पी.के. विश्वविद्यालय, करैरा शिवपुरी, मध्य प्रदेश।
** अर्थशास्त्र विभाग, पी.के. विश्वविद्यालय, करैरा शिवपुरी, मध्य प्रदेश।

जाए तो अन्य कृषि व्यवसाय किसानों की आमदनी का एक प्रमुख स्रोत बन जाता है वर्तमान में यदि किसी फसल में मुख्य फसल नष्ट हो जाए तो अन्य कृषि व्यवसाय किसानों की आमदनी का स्रोत बन जाते हैं साथ ही साथ विधिधीकृत खेती में प्राकृतिक संसाधनों का भी उचित उपयोग होना चाहिए इनके अलावा किसान मांग व आपूर्ति में होने वाले परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप मूल्यों में उतार–चढ़ाव से कम प्रभावित होते हैं भारत सरकार ने ज्यादातर अनाज के मामले में आत्मनिर्भर हैं इसके बावजूद यहां कुपोषण एनीमिया अपेक्षित बच्चे बौनेपन की समस्या बड़े पैमाने पर दर्शाती है इन समस्याओं से हमें निपटने के लिए पोषण सुरक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार को बढ़ावा देने व पोष्टिक सुरक्षा के लिए विविधीकरण कृषि पर जोर देने की बहुत जरूरत है इसके तहत दलहन तिलहन फल सब्जियाँ मशरूम मीट अंडा मछली और चिकन जैसे प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों की उपलब्धि को बढ़ाया जा सकता है पिछले दशकों में खाद पदार्थो की उपलब्धता को बढाया जा सकता है पिछले तीन चार दशको से गॉव की लाखों हेक्टेयर जमीन शहरो की चपेट में आ गई है इसका सीधा प्रभाव ग्रामीण के जीवन आजीविका और रोजगार पर पड़ रहा है कृषि योग्य जमीन का क्षेत्रफल सीमित हो गया है भविष्य में इनके बढ़ने की संभावना बिल्कुल कम है साथ ही साथ कृषि में बढ़ती उत्पादन लागत खेती की तमाम कठिनाइयों व घटते फायदे के कारण युवाओं का झुकाव भी कम हुआ है यह देखा गया है कि जिन फसलों का समर्थन मूल्य सरकार तय करती हो उन्हें छोड़कर सभी बाकी फसलों के दाम बिल्कुल अनिश्चित रह जाते हैं इस वर्ष में फसल जिस बर्ष में फसल अधिक होती है उस वर्ष में कीमतें गिर जाती हैं जब कीमतें गिरती है तब किसान अगले वर्ष और फसल को कम उगाते हैं और फिर बाजार में उत्पादन कम होने से दाम में वृद्धि हो जाती है प्रत्येक दो चार वर्षों में है चक्र पूरा घूम जाता है

कृषि फसल से रोजगार के स्वअवसर

कृषि और फसल रोजगार के स्वअवसर से निम्नलिखित व्यवस्थाएं द्वारा कृषकों कृषि और फसल रोजगार के अवसर से निम्नलिखित व्यवस्थाएं द्वारा कृषकों पशुपालन व ग्रामीण युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाए जा सकते हैं

बागवानी फसलो से रोजगार

बागवानी फसलों की खेती से स्वरोजगार के अवसर बढ़ गए हैं बागवानी फसलों से मुख्यतः सब्जियों की कृषि में ग्रीनहाउस कृषि का तेजी से विकास हुआ है इस तकनीक से सस्ते पॉलिथीन हाउस में कुछ सब्जियां जैसे टमाटर बैंगन शिमला मिर्च कद्दू वर्गीय फसलों जैसे खीरा ककड़ी तोरी लौकी टिंडा तरबूज खरबूज कि बेमौसम अर्थात जाड़ों में नर्सरी तैयार करने अर्थात जाड़ों में नर्सरी तैयार करके 1 से 2 महीने अगली खेती कर अच्छा लाभ कमाया जा सकता है निर्मित कई महंगे खाद्य पदार्थ जैसे आचार, मुरब्बा, चटनी, पेस्ट पाउडर, मिठाईयां, सॉस बना कर आय बढ़ाई जा सकती है सब्जियों का प्रसंस्करण कर अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है गाजर, पेठा, लौकी व परवल से कई मिठाइयां बनाई जाती हैं आज पूरे देश के अनेक भागों में इस पर अनेक छोटे उद्योग चल रहे हैं टमाटर से केचप, सॉस, चटनी फ्यूरी पेस्ट आदि कई प्रकार के पदार्थ बनाए जाते हैं फूलगोभी, करेला, परवल, मिर्च कुंदरू आदि से आचार बना जाता है लहसुन, प्याज, अदरक, करेला, पुदीना और चौलाई जैसी सब्जियों से कई तरह के खाद पदार्थ बनाकर किसान अपनी आमदनी बढ़ा सकता है प्याज व मेथी को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर व सूखाकर मसाले की तरह बेचा जा सकता है खरबूजे के बीजों को कई मिठाई बनाते हैं इनके अलावा ठंडे शरबत में प्रयोग किया जाता है। तरबूज खरबूज के रस को पेय पदार्थ के रूप में प्रयोग किया जा सकता है कई सब्जियां जैसे करेला कद्दू, तरबूज, चप्पन कद्दू के बीज से खाद्य तेल में भी निकाला जा सकता है।

उन्नत कृषि बीज व नर्सरी उत्पादन से स्वरोजगार

देश में उन्नत किस्म के बीजो की बढती मांग, विभिन्न प्रकार की फसलों सक स्वयं का व्यवसाय चलाया जा सकता है स्वयं परागण वाली सब्जियों जैसे लौकी, तोरई, करेला, खीरा, ककड़ी, खरबूज, तरबूज, अंडा, फूलगोभी, पत्तागोभी, गांठगोभी, मूली शलजम, गाजर, प्याज, पालक, ब्रोकोली इत्यादि संकर किस्मों के किसान थोड़ी सी जानकारी और ट्रेनिंग के साथ सफलतापूर्वक पैदा कर सकते हैं ऐसा करने से खेती में होने वाले खर्च को भी कम किया जा सकता है साथ ही पढ़े लिखे युवा सब्जी बीज उत्पादन व्यवसाय के रूप में अपना सकते है।

मशरूम उत्पादन से स्वरोजगार

मशरूम उत्पादन से स्वरोजगार हमारे स्वास्थ्य के लिए संतुलित भोजन और प्रोटीन का विशेष महत्व मशरूम इसका एक हमारे स्वास्थ्य के लिए संतुलित भोजन और प्रोटीन का विशेष महत्व मशरूम किस का एक अच्छा स्रोत माना जाता है मशरूम की खेती के लिए ना तो ज्यादा जमीन की उन्हें अधिक पूंजी की जरूरत होती है मात्र छप्पर के शेड में ही मशरूम की फसल सफलतापूर्वक की जा सकती है पौष्टिकता कि दृष्टि से मजदूरों की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है इसी कारण मशरूम की खेती से रोजगार प्राप्त करके अच्छा लाभ कमाया जाता है इस व्यवसाय के लिए तकनीकी ज्ञान का होना अति आवश्यक है जिससे कि खाद्य मशरूमों की पहचान के साथ–साथ उन्हें अवांछनीय मशरूमों व अन्य सूक्ष्मजीवों के संक्रमण से बचाया जा सकता है।

फूलों की फसलों से स्वरोजगार

फूलों की फसलो से स्वरोजगार वर्तमान में पारिवारिक धार्मिक और सामाजिक समारोह में फूलों के प्रयोग का प्रचलन बढ़ता जा रहा है शहरों में फूलों के प्रयोग का प्रचलन बहुत बढ़ गया है जिससे विभिन्न प्रकार के फूलों की पूरे वर्ष भर मांग बनी रहती है फूलों की व्यवस्थाएं रूप से खेती करके ग्रामीण युवा आसानी से अच्छी आय में वृद्धि कर सकते हैं फूलों की कृषि करते समय फूलों का चयन इस तरह किया जाना चाहिए कि जिस पर फूलों की कृषि करते समय फूलों का चयन इस तरह किया जाना चाहिए कि जिससे पूरे वर्ष भर नियमित आय मिलती रहे हमारे दैनिक जीवन में फूलों की उपयोगिता विभिन्न सजावटी कार्यों में बढ़ती जा रही है साज सजावट और सौंदर्यीकरण में इनका बहुत महत्वपूर्ण स्थान है गुलाब व गुलाब से निर्मित वस्तुओं के निर्माण से निर्यात से काफी विदेशी मुद्रा भी अर्जित की जा सकती है कृषक फूलों की कृषि द्वारा अपनी आय को कई गुना बढ़ा सकते हैं वर्तमान में अनेक भागों में कट फ्लावर लूज दोनों की तरह की काफी मांग है फूलों को बेचने के अलावा गुलाब का विशेष रूप से गुलकंद, इत्र बनाने में प्रयोग किया जाता है जो सौन्दर्य प्रसाधन में प्रयोग किया जाता है इसी प्रकार रजनीगंधा व ग्लेडिओलस फूलों की खेती कर के ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक बेरोजगारी को दूर किया जा सकता है वर्तमान में ग्रामीण क्षेत्र से बड़े स्तर पर युवाओं का शहरों की ओर पलायन हो रहा है साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि की कमी व कम आमदनी की वजह से रोजगार के अवसर कम होते जा रहे हैं ऐसे में फूलों की कृषि को रोजगार रूप में अपनाया जा सकता है फूलों की अधिक खपत उपयोग एवं खड़ी शहरों द्वारा पैरों के नजदीक अधिक है इसलिए फूलों को शहरी क्षेत्रों के आस–पास हो गाने से अधिक आय प्राप्त की जा सकती हैं और परिवार की आजीविका को भी चलाया जा सकता है

औषधीय एवं सुगंधित पौधों से स्वरोजगार के अवसर

देश में आजकल दवाइयों के लिए औषधीय पौधों और फल फूल इत्यादि खेती व्यापार के लिए की जा रही है लहसुन, प्याज, अदरक, करेला, पुदीना, और चौलाई जैसी सब्जियां पौष्टिक होने के साथ–साथ औषधीय गुणों से भी भरपूर है गिलोय, तुलसी, एलोवेरा, हल्दी, मेथी, सोंठ, सौंफ से कई तरह के आयुर्वेदिक औषधियां व खाद पदार्थ बनाकर ग्रामीण युवा रोजगार के साथ साथ अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं इस व्यापार की शुरुआत के लिए ग्रामीण बेरोजगार बैंक से लोन लेकर कंपनी से अपना स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ कर सकते हैं तथा औषधीय पौधों की खेती के साथ–साथ उनका प्रसंस्करण करके भी स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं सुगंधित पौधों के बारे में अधिक जानकारी के लिए राष्ट्रीय औषधि एवं सुगंधित पादप अनुसंधान केंद्र किसी भी अनुसंधान केंद्र में जाकर संपर्क कर सकते हैं।

कृषि उत्पादों के मूल्य संवर्धन से स्वरोजगार के अवसर

भारत में अधिकांश कृषि उत्पाद बिना प्रसंस्करण का उपयोग किए जाते हैं वर्तमान में खाद्य प्रसंस्करण की भूमिका बढ़ती जा रही है जिसके द्वारा मूल समर्थन किया जाए तो किसानों को कृषि उत्पादन का अधिकार मिलेगा प्रशिक्षण हो तो ज्यादातर आधारित होता है इसे निर्यात का प्रमुख उद्योग बनाकर ग्रामीण काम का रोजगार के अवसर पैदा किए जा सकता है भारत दुनिया में फलों सब्जियों का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है हमारे देश में हर वर्ष करोड़ों रुपए की फल सब्जियां नष्ट हो जाते हैं क्योंकि उपयुक्त सुविधाओं के अभाव में हम उन्हें सुरक्षित नहीं रख

पाते हैं इससे छोटे व सीमांत किसान अधिक प्रभावित होते फसलों से प्राप्त उत्पादों के प्रसंस्करण परिरक्षण से उनका मूल्य समर्थन किया जा सकता है जैसे कि मूंगफली से बने हुए नमकीन दाने चिक्की सोयाबीन से दूध दही बनाना फलों से शर्बत, जाम जेली बनाना, आलू से चिप्स बनाना गन्ने से गुड़ बनाना गुड़ के शीरे व अंगूर से शराब व अल्कोहल बनाना किसी विभिन्न इलाकों से तेल निकालना दलहनी उत्पादों से दाले बनाना आज इस प्रकार का सौर ऊर्जा प्राप्त करने में भी दुगना किया जा सकता है

ऑर्गेनिक कृषि उत्पादों से स्वरोजगार के अवसर

ऑर्गेनिक कृषि उत्पादों से स्वरोजगार के अवसर वर्तमान में गांव के लोग ऑर्गेनिक कृषि से अपना जीवन को खुशहाल बना रहे हैं दुनिया भर में स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए लोग ऑर्गेनिक कृषि उत्पादों को अपने खाने में शामिल कर रहे हैं वैश्विक बाजार भारत के ऑर्गेनिक कृषि उत्पादों की मांग में वृद्धि होती है इसका परिणाम है कि उत्पादों के निर्यात में वृद्धि हो रही है और ने कृषि उत्पादों का सर्वाधिक निर्यात अमेरिका यूरोपीय यूनियन को हुआ है एग्रीकल्चर प्रोडक्ट डेवलपमेंट अथॉरिटी ने देश से किया गया था कृषि उत्पादों का निर्यात किया गया जबकि वैश्विक बाजारों में जिन उत्पादों की सर्वाधिक मांग रही है उनमें अलसी तेल सोयाबीन अरहर चना चावल चाय व औषधि पौधे शामिल अमेरिका यूरोपीय यूनियन के अलावा कनाडा ताइवान व दक्षिण कोरिया से भी अधिक उत्पादन बढ़ती जा रही है वादों का उत्पादन किया गया है इनमें तेलंगाना मोटे अनाज का पाठ दलहन औषधि पौधे चाय फल मसाले में भी सब्जियां और कॉपी जैसे उत्पाद शामिल होने के उत्पाद के बलखा के उत्पादों तक ही सीमित नहीं है बल्कि कपास के रेशे और फंक्शन फूड उत्पाद भी है इससे सामने अफ्रीका के अनुसार कृषि उत्पादों के मामले में मध्य प्रदेश सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है इसके बाद कर्नाटक उत्तर प्रदेश राजस्थान का नंबर आता है का होता है जिंसों में सबसे ज्यादा उत्पादन तिलहन का होता है वित्तीय वर्ष तिलहन सबसे ज्यादा उत्पादन तिलहन का होता है कृषि उत्पादों का निर्यात हुआ होने कृषि उत्पादों की बढ़ती मांग को देखते हुए उन्हें खेती को एक व्यवसाय के रूप में अपनाया जा सकता है।

वर्मी कंपोस्ट यूनिट से स्वरोजगार

वर्मी कंपोस्ट यूनिट से स्वरोजगार आजकल किसान भाई फॉर्म पर बायोगैस यूनिट ऑफ वर्मी कंपोस्ट यूनिट लगाकर भी कमाई कर रहे हैं फसल अवशेषों को जलाने की समस्या से पढ़ने के लिए कृषि वैज्ञानिकों जाने का उपाय सुझाए हैं जिसमें वर्मी कंपोस्ट टैक्स विभाग महत्वपूर्ण है इस प्रक्रिया में फसल अवशेषों तथा गोबर का सदुपयोग करके बढ़ने का शोषण किया जा रहा है एक तरफ वायु प्रदूषण की समस्या को रोका जा सकता है तो दूसरी तरफ किसानों को उपलब्ध कराई जा सकती है इसमें फसल अवशेषों को एक लंबे एक लंबे अवशेषों के एक लंबे ढेर मे रखकर छोड़ दिए जाते हैं इस प्रक्रिया के अंतर्गत केंचुए फसल अवशेष का गोबर खा कर अच्छी खाद बना देते हैं जिसे हम वर्मी कंपोस्ट कहते हैं आज फसल अवशेषों की समस्या बडी गंभीर फसल अवशेषों को कैसे हो की सहायता से खाद के रूप में परिवर्तित करना अति आवश्यक है ताकि फसल अवशेषों की समस्या से निपटा जा सके फसल में परिवर्तन करके दोसर तत्वों को पढ़ाया जाता है इस प्रक्रिया में कछुए धीरे प्रजनन सिल्वर का संख्या बढ़ते हैं इस प्रकार एक से डेढ़ माह में अधिक गुणवत्ता की की जाती है जिसे जानकर इसे छानकर थैलियों या बोरियों भर लेते हैं इसके साथ ही वर्मी कंपोस्ट द्वारा ग्राम युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है आज देश के विभिन्न भागों में बरगद से रूपया 12 से 15 प्रति किलोग्राम है।

मधुमक्खी पालन

भूमिहीन श्रमिकों पुरूष और महिलाओं के लिए फायदेमंद व्यवसाय एवं रोजगार हैं। कृषि विष्वविघालय एवं कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा मधुमक्खी पालकों का प्रषिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर प्रषिक्षित किया जा रहा हैं। विभाग द्वारा प्रषिक्षित मधुमक्खी पालकों के बीच उपयुक्त प्रजाति की मधुमक्खी एवं बॉक्स का वितरण कृषि रोड मैप 2012–17 के तहत किया गया हैं। मधु के प्रसंस्करण एवं पैकेजिंग को प्रोत्साहित किया जा रहा हैं। गया एवं जहानाबाद में एक–एक मधु प्रसंस्करण इकाई की स्थापना कर प्रसंस्करण का कार्य सम्पादित किया जा रहा हैं। इस कार्यक्रम से जीविका की महिला समूह को सम्बद्ध कर ऐसें महिला समूह की आय में वृद्धि करायी गयी हैं।

स्वरोजगार के लिए सुझाव

- ग्रामीण किसानों की क्षमता को तलासने का प्रयास करना।
- एक उद्यमी बनने के लिए अच्छे खेत प्रबंधकों को तैयार करना।
- कृषि उद्यमी को उद्‌यमशीलता गुणों और प्रबंधकीय कौशल का उपयोग करने की आवश्यकता होती है।
- नई प्रौद्‌योगिकियों और नवाचार को बढ़ावा देना।
- समूहिक उद्यमिता एवं प्रबंधन कौशल को बढ़ावा देना।
- नई तकनीकी योजनाओं को लाने का प्रयास कर

निष्कर्ष

भारत मे रोजगार प्राप्त करने के लिए स्वयं को विकसित करना चाहिए। जिससे लोग स्वरोजगार उत्पन्न कर सके और अपने ज्ञान में वृद्धि करते रहना चाहिए।निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि कृषि विस्तार कृषि के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान ज्ञान को लागू करने की प्रक्रिया है,किसान की षिक्षा,प्रषिक्षण और प्रदर्षन के माध्यम से अभ्यास करने की आवष्यकता प्राप्त करने में कौषल प्राप्त हुआ है। भारत एक उभरती हुई अर्थव्यवस्था है भारतीय कृषि प्रणाली ने डिजिटल परिवेश में कृषि पुस्तकालयों की भूमिका पर भौतिक जानकारी और नवीन जानकारी,कैसे कम लागत पर कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए लाभप्रदता बढ़ाना,खाद्‌य सुरक्षा बढ़ाना,ग्रामीण आजीविका में सुधार करना और बढ़ावा देना है। कृषि उद्यमिता के कारण आधुनिक उपकरणों के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों का विकास हुआ है जो कि भारत में कृषि विस्तार एक विशाल नेटवर्क के रुप में उपयुक्त सिद्ध हो रहा है। भारतीय कृषि में नई–नई योजनाओं को अपनाया है और कई योजनाओं में सफल भी होते जा रहे है इसलिए ग्रामीण विकास में कृषि उद्यमिता की जरुरत बढती ही जा रही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल,एच.एन. ''विदेशी सहयोग और भारत में पूँजी का प्रवाहः उभरते रुझान और निहितार्थ'' द इंडियन जर्नल ऑफ कॉमर्स, वॉल्यूम 191, भाग 2 जून 1997.
2. कुमार,आशीष, '' पर्यावरण के साथ कृषि विकास पर प्रवेश,भारतीय कृषि क्षेत्र के विषेष संदर्भ में'' लखनऊ विश्वविद्यालय।
3. तिवारी, डॉ. के.एन. ''कृषि विकास पर टिका ग्रामीण विकास'' कुरुक्षेत्र, जून, 2018।
4. थानीकाचलम ए 2009, कृषि समृद्वि के लिए कृषि क्लिनिक, फाईनेसिंग कृषि 41(2) 33–4।
5. भटनागर,भावना (2009)उद्यमिता विकास और लघु व्यवसाय प्रबंधन, टन्ल्न भारत की षिक्षा, नई दिल्ली, भारत।
6. नितिन, भागचंद, बाछव (2012), ग्रामीण किसानो की जानकारी की आवश्यकताः एक अध्ययन, महाराष्ट्र भारत।
7. बधई,बी (2011–12),उद्यमिता विकास,धनपत राय एंड कंपनी (पी) लिमिटेड नई दिल्ली,भारत।
8. ग्रामीण विकास बेबसाइट
9. ग्रामीण विकास –कटार सिंह
10. पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास–धमेंन्द्र सिंह
11. भारतीय अर्थशास्त्र–दत्ता एवं सुन्दरम
12. शैक्षिक दृष्टिकोण–प्रो0 प्रेमनारायण सिंह
13. अर्थशास्त्र – डॉ0 जे0पी0 मिश्रा
14. योजना पत्रिका प्रकाशन 2020–2021
15. कुरूक्षेत्र पत्रिका प्रकाशन जुलाई 2022
16. कुरूक्षेत्र पत्रिका प्रकाशन मई 2022
17. ग्रामीण अर्थशास्त्र–रमेश चन्द्र शर्मा
18. कृषि शास्त्र–पं0 तेज शंकर कोचक

❖◆❖